अभिनन्दनीय हे वन्दनीय

अभिनन्दनीय, हे वन्दनीय, शत बार प्रणाम तुम्हें मेरा ।
हे चिन्त्यनीय, हे पूजनीय, शत बार प्रणाम तुम्हें मेरा ।
स्वागत हित अश्रु मोतियों की जयमाला सुघर बनाई है,
श्रद्धा के पावन रंग में रंग भावों की सेज सजाई है ,
आओ प्राणों में तपोमूर्ति, शत बार प्रणाम तुम्हें मेरा ।
फेरो क्षण भरको दृष्टि इधर जीवनगंगा की धार बने ,
आन्दोलित जीवन तरणी हित तेरी करुणा पतवार बने ,
भरदो प्रकाशनव ज्योतिमूर्ति शत बार प्रणाम तुम्हें मेरा ।
मनकी अस्थिरता चंचलता को मिल जाए किंचित संयम,
उल्लास लास हो प्राणों में उमा बन जाए अंतरतम ,
अनुपम विभूति,हे ज्ञानमूर्ति शत बार प्रणाम तुम्हें मेरा ।
साधक के हित में तुम अपना सर्वस्व निछावर कर देते,
जीवन की खाली झोली को मोती मणियों से भर देते,
हे दानवीर, हे, त्यागमूर्ति, शत बार प्रणाम तुम्हें मेरा ।
प्राणाहुति का ले सबल मन्त्र देते साधक को शक्तिदान,
मानवताकी आत्मोन्नतिहित तुम सतत प्रयत्नरत प्राणवान,
नवपथ सृष्टा, हे दिव्यमूर्ति शत बार प्रणाम तुम्हें मेरा ।

रमा पति डींगर

तपोमूर्ति जब तुम जन्मे थे

रमा पति डींगर

तपोमूर्ति जब तुम जन्मे थे जनम लिया था तभी प्रभा ने
जनम जनम के नयन उनींदे तुमने खोल दिए अनजाने
कितनी जटिल ज्ञान की राहें योग पंथ कितना दुर्गम था
अनगिन सोपानों पर चढना कितना दुस्तर और विषम था
अनगिन जीवन भटक रहे थे अनगिन सांसें थकी थकी थीं
पर तुम सहज मार्ग की दीपक लाए तम के द्वार जलाने
तुमने दिए नयन नयनों को तुमने दी अंतर को वाणी
बदली पूजन की परिपाटी स्नात हुए सुखरस में प्राणी
उत्तर एक प्रश्न का कितना सत्य और सुन्दर निकला है
शमा जलेगी जब महफिल में दौडेगें कितने परवाने
साथ ग्रहस्थी भी हँसती है यह कैसा सन्यास तुम्हारा
एक नया जीवन देता है स्वासों को आभास तुम्हारा
किरणें चमक रहीं हैं ज्यों ज्यों छूट रहा है तम का पहरा
शून्य प्राण तारों में गुंजन भरा आज तेरी वीणा ने
कभी कृष्णने विपथ पार्थ पर आत्मशक्ति का आश्रय लेकर
अंतर का अज्ञान छला था अर्जुन को प्राणाहुति देकर
तुम भी जीवन के काँटों में प्राणाहुति का आश्रय लेकर
उंगली पकड़. चले साधक की अपनी मंजिल तक पहुँचाने

शत-शत प्रणाम

(तुलसीदास चतुर्वेदी)

घिर रही सजल थी घोर रजनि,
हाँ जग था केवल तमस-पुंज।
तुम उतरे लेकर विधु-दीपक,
अरु मानवता का विमल-कुन्ज ॥

फिर आलोकित हो उठी मही,
नभ के तारक हो गये सजग।
वह दिशि कंचन हो गयी जिधर,
बढ़ गये तिहारे चरण-सुभग ॥

निजश्वास और प्रतिश्वासों में,
मानव का हाहाकार लिये।
इच्छा का कारागार लिये,
बेसुधि का पारावार लिये ॥

आओ बैठो, अन्तर में भर दो, ज्योति और आशा ललाम।
कैसे स्वागत मैं करूँ देव, तुम को प्रणाम, शत-शत प्रणाम ॥

आओ नव-नव अनुराग लिये,
अरु युग-परिवर्तन का सपना।
कैसे संभव जग-संकट पर,
तव चरण-चिन्ह का है मिटना ॥

हाँ क्षितिज-पटी पर हीरक से,
अब जड़ जायेगी अमर कहानी।
आज हिमालय तक गूंजेगी,
"बाबू" तेरी कोमल बानी ॥

निःश्वास अमर में है तेरी,
उस महा-शक्ति की चरम विजय।
हुँकार अनोखा कर देगा,
जगती में नीरव महाप्रलय ॥

मस्तक पर अंकित दिव्य-किरण, 'हिमकर' तव शोभा है ललाम।
कैसे स्वागत मैं करूँ देव, तुम को प्रणाम, शत-शत प्रणाम ॥

x: d in itu l c<dj

जगदीश कुमार 'मृगेश'

गुरु के पद पूजन से बढ़कर पूजन कौन बड़ा होता है |

अंतर के विष को पीकर जो
भरता दिव्य सुधा की धारा
तिमिर शिविर में ज्योति जलाकर
हरता युग युग का अँधियारा
जड़ता को चेतनता देकर
धरती को करता जो अम्बर
हिम के ठोस पिंड को देता
नव जीवन नूतन गति का स्वर
ऐसे गुरु वंदन से बढ़कर वंदन कौन बड़ा होता है |

सतगुरु वही कि जिसमे मंज़िल
देने की क्षमता होती है
मन पर संचित् मल विकार को
जिसकी दिव्य् द्रष्टि धोती है
नयन नयन बन जाये क्षण में
अस्थिरता स्थिर हो जाये
प्राणशक्ति का सौरभ पाकर
लौकिकता मन की खो जाये
गुरु के दिव्य चक्षु से बढ़कर् कंचन कौन बड़ा होता है |

ईश्वर ही मानव तन धर कर
संज्ञा सतगुरु की पाता है
जनम जनम के विस्मृत पथ की
याद दिलाकर ले जाता है
सतगुरु की समदृष्टि कभी भी
ऊँच नीच का भेद न जाने
अनगिन रूप रंग आकृतियों
में अपनी सत्ता पहचाने
समदर्शी गुरु के चिंतन से चिंतन कौन बड़ा होता है |

तत्व जनित तन के बंधन में
गुरु असीम बनकर लहराता
भौतिकता की गहन गुफा में
सहज ज्योति का दिया जलाता
साधक की खाली झोली को
जो मोती मणियों से भरता
जनम जनम का भार उठाकर
बोझिल मन को हल्का करता

x: in jt vtu l o<dj vtu dku cMk gkrk g A

tVk c<kdj x: dgyku
oky rk vufxu fey tkr
yfdu fdru ,l gkr
tk lPp iFk dk fn[kykr
vkt ;xk d ckn /kjk ij
egkT;kfr dk gvk vorj.k
mBk nhfidk lfpr dj yk
gvk Hkkj dk iu% tkxj.k
dik fdj.k vtu l c<dj vtu dku cMk gkrk g A

tue tue dh tyu riu dk

जगदीश कुमार 'मृगेश'

जनम जनम की जलन तपन को चन्दन बना दिया है तुमने
भले भटके उद्धत मन को वंदन बना दिया है तुमने

सौरभ के फैले सागर में जीवन क्षण डूबे उतराये
भावों के पक्षी बरबस ही चहक चहक गीतों को गाएँ
ऐसा है इसलिए की मन को मधुवन बना दिया है तुमने
जनम जनम की जलन तपन को चन्दन बना दिया है तुमने

रोम रोम में तेरी पुलकन तेरा ही मादक स्पंदन
मानस में तेरा ही वैभव तेरी मधु छवियों का नर्तन
तब से है जब से नयनों में अन्जन लगा दिया है तुमने
जनम जनम की जलन तपन को चन्दन बना दिया है तुमने

कल थी पास गरल की पीड़ा आज तुम्हारी कृपा सरल है
स्वांस स्वांस में महक अनोखी बाहर् भीतर सब निर्मल् है
सावन की भीगी पलकों को फागुन बना दिया तुमने
जनम जनम की जलन तपन को चन्दन बना दिया है तुमने

तू ही मंदिर तू ही मस्जिद तू ही काबा तू ही काशी
कोई खोजे कहीं किसी को यह मन तो तेरा विश्वासी
अपनी विशद भुजा को मेरा बंधन बना दिया है तुमने
जनम जनम की जलन तपन को चन्दन बना दिया है तुमने

ejs ekfyd ‘kr ‘kr i.kke

ejs ekfyd ‘kr ‘kr i.kke

eu gf”kr] iyfdr jke&jke]

lhrkij vk, vkt jke AA ejs ekfyd -----

vufxu rkjk dh nhfIr]

dkfV Å”kkvk dk Jxkj eugj

_rjktk dk dkey lkjHk]

ijch c;kj dk u’kk vej

/kjrh dh /khjt >>k,]

yrh ro pj.kk e fojke AA ejs ekfyd -----

eVBh Hkj ru] Qyk lk eu

vk rM-i rfM-r ee ikou ?ku

fucU/k çe l vujftr]

noRo cukr tu thou

vk lHkx pj.k] dj rEg oj.k]

dkb D;k jg vi.k dke AA ej ekfyd -----

g rikir] g efDrnr]

g ;x l"Vk] g vfou'oj

g 'kfDrikr d uo m|e]

g lgt ekx d ixEcj

vujkx i.k g cjkxh]

ngh fong loK jke AA ej ekfyd -----

v/;kReokn d dykdkj]

nkuk nfu;k d rktnkj

re lk D;k gkxk ckj&ckj]

re gk b'oj d 'kkgdkj

g dkfV ueu] g dkfV oj.k]

;x ;x d redk 'kr ç.kke AA ej ekfyd -----

fuLrC/k ‘kCn dk e|[kfjr dj]

vUrj e¨ l|jr çfrf”Br dj

l¨r|fyr ofRr ;k¢ çKk n¨]

uj dk dj nr¨ gk v{kj

ekuo dk tk dj n¨ fojkV]

og fu’p; gh bl’oj leku AA e¢j¢ ekfyd -----

r|e lgt&ekxl ij ckg idM]

y¨ pyk fxj¨ c/ku dVdj

chjkuk e¨ mM i¨[k Fkd¨]

vc l¨/;k dk tkuk fut ?kj

;g l ty çkr] jl Hkhxk eu]

r|edk vfi¨r e¢j¢ vuke AA e¢j¢ ekfyd -----

jekifr Mhxj

एक तेरा ही सहारा

एक तेरा ही सहारा

कौन मेरा मैं हुआ किस का भला सब झूठ नाते
डूबते कुछ पास में कुछ दूर से मुझको बुलाते
जा रहा हूं धार में बहता नहीं मिलता किनारा
एक तेरा ही सहारा

म्रत्यु का सन्देश जैसा प्यार का आह्वान होना
आस का विश्वास केवल दर्द कर्ता और दूना
जिन्दगी का सत्य केवल स्वप्न का परिचय हमारा
एक तेरा ही सहारा

कूल से कुछ आ रहे आश्वासनों के शब्द धीमे
धन्य मेरे प्यार विष रस ढूंढता हूं मैं अमिय में
कूल वालों शुक्रिया है डुबना मुझको गवारा
एक तेरा ही सहारा

तत्व काया मांग लेते चेतना विधि छीन लेता
बिखरती अन्तिम व्यवस्था काल सांसे बीन लेता
जिन्दगी भी अन्ततः रोती सिसक कर सर्व हारा
एक तेरा ही सहारा

तुम बिना हाथों सहेजोगे मुझे मैं जानता हूं
तुम बिना आए मिलोगे मैं तुम्हें पहचानता हुं
बैठने देगा न तुमको दर्द जो मैने उभारा
एक तेरा ही सहारा

कूल पीछे हो मुझे क्या दूर उससे आ गया हूं
जिस लहर में चल रहा हूं कूल उसमें पा गया हूं
म्रदु स्वरों में आपने जिस दिन मुझे दिल से पुकारा
एक तेरा ही सहारा

रमा पति डींगर

Jh pj.kksa esa 'kr ckj ueu

श्री चरणों में शत बार नमन,
हे पूज्य ! तुम्हारा अभिनन्दन

तुम जीवन रण के विजय केतु
भव अम्बुधि के हो प्रबल सेतु
अवतरित हुए तुम धरती पर
भटके जन के उद्धार हेतु
जन जन करता तव पद वन्दन
हे पूज्य ! तुम्हारा अभिनन्दन

मानव जीवन का परम लक्ष्य
पा सकने मे असफ़ल समष्टि
तुमने प्राणाहुति के द्वारा
जग को दे डाली दिव्यद्रष्टि
अब प्राणों मे है नव स्पन्दन
हे पूज्य ! तुम्हारा अभिनन्दन

वरदान तुम्हारा सहज मार्ग
दिव्यता प्राप्ति सोपान सरल
युग युग के प्यासे मानव को
वाणी तेरी पीयूष तरल
आप्यायित है जन जन का मन
हे पूज्य ! तुम्हारा अभिनन्दन

श्री युक्त राम तुम चन्द्र सद्रश
विकसित कर निज चान्दनी मधुर
शालीन भाव से कर देते
आलोकित हर मानव का उर
प्रमुदित प्रकाश पा नव जीवन
हे पूज्य ! तुम्हारा अभिनन्दन

तुम हे समर्थ गुरु ! दूर करो
मेरे मानस की जटिल पीर

जीवन तरणी मन्झधार पड़ी
शुभ कर से दे दो शान्ति तीर
तुमको अर्पित तन मन जीवन
हे पूज्य ! तुम्हारा अभिनन्दन

श्री चरणों में शत बार नमन,
हे पूज्य ! तुम्हारा अभिनन्दन

तिलेश्वर नाथ मिश्र

ये कौन

कस्तूरी चतुर्वेदी

ये कौन धरा पे आये हैं ये कौन जहां पे छाये हैं
लाला के खज़ाने के हीरा ये सबको सजाने आये हैं

थी गुदड़ी काली पर रहती थी कांधे पर जिनके हरदम
उस प्यारी गुद्ड़ी के लालन साक्षात्कार बन आये हैं

सतगुरु की इच्छा शक्ति ने क्या खूब तराशा था इनको
अब मानव मन को तराश रहे ये लाल बनाने आए हैं

प्राणों की आहुति दे सबको भौतिकता की पालिश धो दी
ये कलाकार आदि के जो सतमूर्ति बनाने आए हैं

सांचा स्वरूप देखे अपना भ्रम में अब और रहे न कोई
भगवान भी भ्रम में पड़ जाये ये कितने रूप में आए हैं

ऊंचे से नीचे आये हैं नीचे से ऊपर ले जाने
ये अद्भुत ममता क्षमता का सांचा प्रतीक बन आये हैं

जागो अब ऐ दुनियावालो ये सुन्दर प्रभात आया अपना
अब रात्रि कहां सन्सार कहां जब रामचन्द्र ये आए हैं

थी दिल्ली दूर जो बाबुजी कहते थे सब अभ्यासी से
वो दिल्ली पास हुई सबके सब इनके दिल में समाये हैं

अब एक है चौखट सहज मार्ग की नमन यही है बस अपना
जिनके थे तिन तक आ पहुंचे ले जायें जहां से आये हैं

ओ समय सदा चलते रहना सन्ध्या है थके न ये कहना
इक्यासीवां जनम दुआ मांगे बस एक में एक मिला देना

जिस घड़ी

जिस घड़ी नयन घूमे तुम्हारे इधर ,
जिन्दगी का अन्धेरा किरन बन गया ।

हो न पाया नयन का विभा से मिलन ,
जिन्दगी की डगर पर अन्धेरा मिला ।
आज चमकी किरन मेघ के बीच से ,
चन्द्रमा सा बिंहसता सबेरा खिला ।
दिव्य आलोक का दान मिलता न यदि ,
तो तिमिर में लुटेरे रतन लूट लेते ।
तुम्हारी क्रिपा ने पुकारा मुझे ,
मन अजाने धरा से गगन बन गया ।

तिमिर की लहर ने फंसाया भंवर में ,
मगर डूबता यान तुमने बचाया ।
डगर पर बिछी मोह भ्रम की निशानी ,
सहज मार्ग का दीप जग मग जलाया ।
अगर तुम न आते मणि ज्योति लेकर ,
कभी क्रान्ति का गान मुखरित न होता ।
नयन को नयन दान जबसे मिला ,
मन अजाने कुमन से सुमन बन गया ।

दिव्य आलोक लेकर जली कीर्तिका ,

तम बिखरने लगा ज्योति गाने लगी ।
अनजले दीप अनगिन जले इस डगर ,
अर्चना प्राण वीणा बजाने लगी ।
छू गयी वर्तिका जो किरन कोर से ,
रूप वो अनजला ज्योति से जल उठा ।
प्राण को मूक आभास ज्यों ज्यों मिला ,
मन तुम्हारे चरण पर नमन बन गया ।

जिस घड़ी नयन घूमे तुम्हारे इधर ,
जिन्दगी का अन्धेरा किरन बन गया ।

जगदीश कुमार 'मृगेश'

बाबूजी का हुक्का

अहोभाग्य है उसका जिसका उनसे ऐसा नाता है
दे सकता है और न कोई वो जो प्यार निभाता है
कौन है वो ? कौन है वो ? -- बाबूजी का हुक्का

सदा साथ में रहता है वह जाता जहां वे जाते हैं
थक जाने के बाद ताज़गी इससे ही वे पाते हैं
कौन है वो ? कौन है वो ? -- बाबूजी का हुक्का

कुछ भी नहीं वो खाता केवल ठन्डा पानी पीता है
उनके ही हर स्वांस में पलकर एकाकी जीवन जीता है
कौन है वो ? कौन है वो ? -- बाबूजी का हुक्का

सिर पर सुलगे अग्नी जिसके भर पेट में पानी
दिया जलाकर धुवां निकाले नाच करे मस्तानी
कौन है वो ? कौन है वो ? -- बाबूजी का हुक्का

चैन नहीं उनको जब इसको निकट नहीं वे पाते हैं
उसके छोटे भाई से ही अपना जी बहलाते हैं
कौन है वो ? कौन है वो ? -- बाबूजी का हुक्का

होड़ लगाते आपस में सब हाथों हाथ उठाने को
एक इशारे पर ही उनके सभी दौड़ते लाने को
कौन है वो ? कौन है वो ? -- बाबूजी का हुक्का

खुद ही उसकी सेवा करते होंठों से लगाकर प्यार
जाने कबसे कितना उसका बैठें हैं खाये उधार
कौन है वो ? कौन है वो ? -- बाबूजी का हुक्का

जाने किन जन्मों का रिश्ता दोनों का है ज्ञात नहीं
खूब समझते एक दूसरे को होती लेकिन बात नहीं
कौन है वो ? कौन है वो ? -- बाबूजी का हुक्का

अग्नि जल वायु संग उसके भू से गगन तक फैला है
पंचतत्व का वह प्रतीक अध्यात्म्वाद का थैला है
कौन है वो ? कौन है वो ? -- बाबूजी का हुक्का

आओ उससे सीखें हम कुछ उसी के जैसा बन जायें
शरणागत हो उसी के ऐसा उनके मन में सन जायें
कौन है वो ? कौन है वो ? -- बाबूजी का हुक्का

सुरेन्द्र मोहन फक्कड़

शाश्वत नमन

(श्री शील कुमार शर्मा, डिप्टीगंज, मुरादाबाद)

हे अमर तपस्वी, मानवता–
का भाग्य बदलने आए तुम
भूले भटकों को मंजिल तक
पहुंचाने वाले तुम्हें नमन ॥ १ ॥

तुम घर्म मेघ प्राणाहुति की
वर्षा से संस्कृति सींच रहे
खुद से खोए, को खुद से ही
मिलवाने वाले तुम्हें नमन ॥ २ ॥

बस इसी जन्म में जीवन का
गन्तव्य तुम्हीं देने वाले
कण कण में छिपी दिव्यता को
दिखलाने वाले तुम्हें नमन ॥ ३ ॥

आश्वासन की थपकी दे कर
भरते जीवन में मधुर शान्ति
दोनों पंखों में गरुड – वेग
भर देने वाले तुम्हें नमन ॥ ४ ॥

जो कोटि जन्म के तपसाधन
के बाद भी न मिल पाता था
वह करुणा से क्षण भर में ही
दे जाने वाले तुम्हें नमन ॥ ५ ॥

अपने वत्सल अन्तस से घुन
चैतन्य जगाते हम सब पर
अविरल प्राणाहुति सतत सुधा
बरसाने वाले तुम्हें नमन ॥ ६ ॥

तुम मातृ-हृदय, हम धूल-सने
कीचड-लथपथ हैं शिशु अबोध
पुचकार हमें आंचल छाया
में लेने वाले तुम्हें नमन ॥ ७ ॥

सादगी तुम्हारा पर्दा है
उसके पीछे से तुम्हें देख–
पहचान सकें वह दिव्य दृष्टि
दे देने वाले तुम्हें नमन ॥ ८ ॥

जामे-तवज्जह

(हनुमान प्रसाद, जौनपुर, यू० पी०)

मरकज से उतारी जाती है,
सीने में छुपाई जाती है।
सागर से नहीं ऐ रिन्द यहाँ,
नज़रों से पिलाई जाती है।
इस मयकदे में हरवक्त सनम,
जन्नत ही लुटाई जाती है।
खामोश तवज्जह से रब की,
हर रूह सँवारी जाती है।
यह महफिल उन परवानों की,
जहाँ शमा जलाई जाती है।
अन्जामे मुहब्बत की शवनम,
हर क्षण बरसाई जाती है।
मुतलासी असल के ख्वाहां को,
यहाँ दिल में बसाया जाता है।

अफलाक की दिलकश बस्ती में,
मेहमाँ को सजाया जाता है।
हर शाने हकीकी आशिक को,
माशूक बनाया जाता है।
हर रूहे हँसी के चिलमन को,
सरे आम उठाया जाता है।
बन्दे हैं कामिल हस्ती के,
कुदरत भी जिन्हें रब कहती है।
जिस वक्त खुदा भी सो जाता,
यह हस्ती मेहर बरसाती है।
रूहानी खजाने के मालिक को,
इन्सानी दुनिया क्या जाने।
यह राज अयां होता है तब,
जब उसकी रजा हो जाती है॥

बाबूजी अब शरण में मुझे लीजिये

बाबूजी अब शरण में मुझे लीजिये,
इस जहां में तो कोई हमारा नहीं।
अपने चरणों मे बस अब पनाह दीजिये,
इस जहां में किसी का सहारा नहीं।

जब से देखा तुझे तब से हैरां हूं में,
पास मन्ज़िल है मिलता किनारा नहीं।
थाम ले अब तू बांहें मेरी आनके,
बहरे गम से तो मिलता किनारा नहीं।

पड़ गयी है यह किश्ती भंवर में मेरी,
तम घना है दिखता किनारा नहीं।
जल्द आकर खबर लेले आका मेरी,
बिन तेरे अब मिलेगा किनारा नहीं।

बेलारानी सक्सेना

****

अपने खुदा से

अपने खुदा से कुछ भी नहीं मांगते हैं हम,
इनसे न जुदा हों ये दुआ मांगते हैं हम।
सदियों से आस तेरी लगाये हुए हैं हम,
तेरे सिवा कुछ और नहीं चाहते हैं हम। अपने खुदा से.....

मल्लाह भी तुम्हीं हो मालिक भी तुम्हीं हो,
अभ्यासियों की कश्ती का साहिल भी तुम्हीं हो।
परवर दिगारे आलम एक छोटी सी इल्तिजा है,
कश्ती को पार कर दो यही चाहते हैं हम। अपने खुदा से.....

उकता गया है दिल मेरा अब इस जहांन से,
ले चल मेरे मालिक मुझे अब इस मुकाम से।
मालिक मेरे हैं रौनके अफ़रोज़ बज़्म में,
हर वख्त इस खयाल से सिजदा कर रहे हैं हम। अपने खुदा से.....

मनोहर लाल सक्सेना

समर्थ गुरू लालाजी के प्रति

(रमापति डींगर, सीतापुर)

हट गये मुर्दा फिजाओं से अँधेरे के कफन,
इक नये दौर का पैगाम लिए उतरी किरण।
दामने गुल पे मचलती है नजारों की फवन,
क्योंकि धरती पे उतर आये हैं पुर नूर चरण।
आज जुल्मत के बदन पर है मुनव्वर चोला,
उस ने चेहरे से नकाब उल्टी तो बरसा कंचन॥

× ×

साजे बहदत पे नया गीत छिड़ा आज के दिन,
वक्त की धार ने इक मोड़ लिया आज के दिन।
वेद का ज्ञान बना किब्लानुमा आज के दिन,
इश्के सादिक ने किया फर्ज अदा आज के दिन।
फिर अनासिर में हुआ आज जुहरे तरतीब,
फातहे दिल जो फतहगढ़ से उठा आज के दिन॥

मायले जज्बे तहय्युर है खुदा की कुदरत,
सोज और साज का संगम है यह सिरें फितरत।
कल्बे इन्सान में यक कतरा है बहरे रहमत,
या कि मस्जूदे मलायक ने किया है हिजरत।
किस तरह शक्ल में इन्सान की भगवान आया,
हो न हो खुद ही हकीकत ने ये की है जिद्दत॥

इश्क और हुस्न की बदली हुई तकदीर है आज,
मासियत तौबा से मिलती है बगलगीर है आज।
उनका पैगामे मोहब्बत जो हमागीर है आज,
जिन्दगी मेरे लिये ख्वाब की तावीर है आज।
डूबने वालों के कदमों में किनारा आया,
रूबरू हुस्ने मोकद्दस की वो तस्वीर है आज॥

अहले मजहब ने खयालात के ढाले जो सनम,
इक नई राह दिखा खोल दिया उनका भरम।
एक मंजिल पे किया जम्मा सभी दैरोहरम,
आज हर एक रखे वा है तेरा बाबे करम।
जल्वये नूरे खुदा थे ये बताऊँ क्योंकर,
तुम हक आगाह थे दुनिया को बनाया है इरम ॥

मस्दरे फैजोकरम नुक्ता रसो जाय अमाँ,
मम्बये जूदो सखा मुजहिरे राजे इरफां
रहरवाने रहे हक के लिये मेहरे तावाँ,
उठ गई तेरी नजर खुलने लगे राजे निहाँ।
मिल गया फखरे मलायक को भी सजदे का मोकाम,
आदमों हौवा का माबूद था नूरे यजदाँ ॥

खुश नजर, साहबे दिल, जाने वफा, पाक दहन,
राहे हक, बाबे असर, रूहे करम, शाहे जमन।
फैज के तेरे खाँ आज भो हैं गंगो जमन,
फिर से सँवलाये हुये चेहरे बने तेज बरन।
तू जो आया मये इरफां का पिलाने वाला,
जिन्दगी शर्द बनी जिसकी तेरी एक सुखन ॥

फिर तेरे हुस्न से वाकिफ हुई आली नजरी,
दिल शिकस्तों को मिला मरकजे आईनागरी।
आहे नाकाम की अब खत्म हुई बेअसरी,
कामराँ होश हुआ पा के तेरी बेखबरी।
अब ये मुमकिन नहीं गुमराह रहे मेरी नजर,
आस्ताँ आपका है और मेरी शोरीदा सरी ॥

यह सहज मार्ग अगर चाँद तो दिल हाला है,
फर्श क अर्श के रुतबे से बदल डाला है।
जिन्दगी जिससे है बाबस्ता ये वो माला है,
सर ब सजदा तेरे कदमों पै खुदा वाला है।
आप के नक्शे कदम काबये अहले दिल है,
मुजहिरे नूरे खुदा है कि मेरा 'लाला' है ॥

कल्ब किस तर्ह बदलते हैं ये देखे दुनिया ,
पैकरे नूर में ढलते है यह देखे दुनिया।
गिरने वाले भी सँभलते हैं ये देखे दुनिया ,
सजदे किस दर पे मचलते हैं ये देखे दुनिया।
जिन्दगी रूप है जिसका वो नजर किसकी है ,
लाला बाबू की शरण आके तो देखे दुनिया ।।

दीदा 'औदिल फ़रशे राह बना कर आओ ,
भेद और भाव की तफ़रीक मिटाकर आओ ।
नग्मा औ नूर की महफिल को सजा कर आओ ,
रौशनी होगी जरा दिल तो जला कर आओ।
इस सहज मार्ग से दिल अपना लगा कर आओ ,
महफ़िले नाज़ के आदाब सिखा कर आओ ।।

भजन

सुश्री कस्तूरी चतुर्वेदी "संध्या"

जब हरि अधिक अधिक नियरेहैं ।
जनम जनम की दुखिया के दुख ,
देखत ही घटि जैहैं ।।
जिवन, मरण अरु जाति कुजात ,
भेद सकल बिलगैहैं ।
पूँजी बांधि धरी अँतर में ,
कण कण में बिखरैहैं ।।
जागत सोवत शरण तुम्हारी ,
अंतर मैं सरसैहैं ।
अगम सुखन की धरी घनेरी ,
'संध्या' नूतन पैहैं ।।

समझ में न आए

समझ में न आए कि तुम और क्या हो,
न ये हो न वो हो कहो और क्या हो ।
न मैं हूं न तुम हो रहा शेष फिर क्या,
लगता है धागा जो जुड़ता वो तुम हो ।
न उत्तर न दक्षिण न पूरब न पश्चिम,
दिशा जो वतन की बताए वो तुम हो ।
न दिन हो न राती न सन्ध्या न बेला,
जो उज्ज्वल जहां में सवेरा वो तुम हो ।
न भक्ति का दामन न ज्ञानों का घेरा,
इससे परे जो है व्यापक वो तुम हो ।
न सीमित असीमित न वेदों की वाणी,
नेति नेति नहीं है जहां वहां तुम हो ।
न कुछ हो न कुल हो जहां कि जबां में,
नफ़ी से भी आगे ले जाए वो तुम हो ।
न तुम हो न मैं हूं तो फिर देर क्यूं,
निखारोगे मुझको वही तुम ही तुम हो ।
न खुद हो न बुत नापरस्तों की महफ़िल,
खुदाई दिलों का नगीना वो तुम हो ।
ये प्राणों की आहुति से पाले जहां में,
तुम्हारी सदा हो सदा तुम ही तुम हो ।
खुदा हो या ना हो ये बाबूजी जाने,
'सन्ध्या' दिलों के दिलोज़ार तुम हो ।

कस्तूरी चतुर्वेदी

समर्पित

समर्पित समर्पित समर्पित समर्पित
तुम्हारा ही जीवन तुम्हें ही समर्पित
ये तन भी समर्पित ये मन भी समर्पित
तुम्हारी ही बुद्धि तुम्हें ही समर्पित
अहंता समर्पित ये ममता समर्पित
तुम्हारी ही इच्छा तुम्हें ही समर्पित
ये दृष्टी समर्पित ये सृष्टि समर्पित
तुम्हारी ही वृत्ति तुम्हें ही समर्पित
ये चिन्ता समर्पित समस्या समर्पित
तुम्हारा ही घरद्वार तुम्हें ही समर्पित
तुम्हारा ही परिवार तुम्हें ही समर्पित
तुम्हारा ही आश्रम तुम्हें ही समर्पित
ये भक्ति समर्पित ये मुक्ति समर्पित
तुम्हारी ही मुक्ति तुम्हें ही समर्पित
ये भाव समर्पित ये प्रेम समर्पित
तुम्हारी ही सांसें तुम्हें ही समर्पित
ये निन्दा समर्पित प्रशंसा समर्पित
तुम्हारी ही समता तुम्हें ही समर्पित
ये दुख भी समर्पित ये सुख भी समर्पित
तुम्हारा ही आनन्द तुम्हें ही समर्पित
ये चिन्तन समर्पित ये सुमिरन समर्पित
तुम्हारा ही प्रभु ध्यान तुम्हें ही समर्पित
मेरे गुरुवर मेरे गुरुवर मेरे गुरुवर
अक्रिया ध्यान तुम्हारा तुम्हें ही समर्पित
हे नाथ ये सब कुछ तुम्हें ही समर्पित
तुम्हारा है सब कुछ तुम्हें ही समर्पित
समर्पित समर्पित समर्पित समर्पित
तुम्हारा ही जीवन तुम्हें ही समर्पित

अज्ञात

आराध्य के प्रति

[श्री वासुदेवसिंह, अमेठी]

संवरिया मेरो चारो धाम ।

नहिं जानूं मैं पुरी द्वारिका
नहिं काशी सों काम ।

संवरिया मेरो ··· ।

मनुज रूप धरि ब्रह्म बिराजत, नयन सुधा अभिराम
सन्मुख होत पाप सब छूटत मनवाँ लेत बिराम ।

संवरिया मेरो ··· ।

चरन कमल की करूं अर्चना, जो है पूरन काम
सुधि से दियना आंतर बारूं देखूं प्रियतम राम ।

संवरिया मेरो ··· ।

तन पिंजरा में मनवां डोलत छिन न लेत विश्राम
बिषय बयार लगत निशिवासर लेहु दीन को थाम।

संवरिया मेरो चारो धाम ।

"परिवर्तन"

(वासुदेवसिंह, अमेठी लखनऊ)

निर्मल घन कुछ ऐसा बरसा, भीग रहा है कोना कोना,
क्रमशः मन निश्चिन्त हो रहा, जाने क्या है कल को होना।

धूम्र विहीन अग्नि से बंचित, अब तक थी जो पंकिल काया,
निशि बीती स्वर्णिम बेला में, भीतर को कुछ बदला पाया।
लगता है प्रभु की अंगुलियाँ, उर को वीणा बजा रही है,
स्नेह रहित रूखे तारों को, धीरे धीरे सजा रही है।
भुला रहे हैं गीत पुराने, नीरव में कलरव का होना।।

इस शरीर के ताने बाने में भी कुछ परिवर्तन पाया,
पात्र न देखे करुणा सागर, दूषित को निर्दोष बनाया।
तत्पर मन पग धूल चाहता, जाने क्यों ?संतोष नहीं है,
पिला रहे जो प्रियतम मदिरा, पीऊंगा कुछ दोष नहीं है
जितनी ही सुधि बढ़ा रहे तुम, चाह रहा मन अपना रोना।।

कितनी सूखी थी यह माटी, अबतो रहती ढीली ढीली,
जब तब ऊपर नीचे मिलकर, होती रहतीं पलकें गीली।
चिरसंचित पतझड़ था अपना, लगता है पल्लव डोलेंगे,
मलय पवन के मादक रव में, सुधियों के कोकिल बोलेंगे।
होता रहता है अन्तर में, नियमित प्रेम बीज का बोना।।

मारग ही यह ऐसा पाया, जिस पर राही निर्भय देखा,
कोटि नमन हे प्रणयी ! सहजमार्ग के तुमने बदली रेखा।
असीमित मल की ढेरी को सहसा कंचन रूप बनाया,
कितने दीन हीन को प्रियतम, दिव्य देश का भूप बनाया।
आदि देव हे ! ब्रम्ह नमन है, तुमसे मेरा हसना रोना,
निर्मल घन कुछ ऐसा बरसा, भीग रहा है कोना कोना।।

गुरू जी के प्रति उद्गार

हामिद अली खाँ 'लाज' सीतापुर

गुरू तेरे दर पै जो आया सवाली ।
यहाँ से न हरगिज गया कोई खाली ॥

हर एक को यहाँ से मुरादें मिली हैं,
कई उजड़े बागों में कलियां खिली हैं ।
हजारों के सर से बलायें टली हैं,
कि चरणों में तेरे हैं जिसने पना ली ॥

भुलसता भड़कता हुआ कोई आये ,
घड़ी पल न भी जिसका दिल चैन पाये ।
तेरे दर पै आकर फकत सर झुकायें ,
शफा गोया हर मर्ज से उसने पा ली ॥

ठिकाना है यह बेकसों का ठिकाना ,
निपट बे सहारों का है आशियाना ।
तेरा दर है या है खुशी का खजाना ,
कि आई खुशाली गयी सब कंगाली ॥

खड़े आज हम हैं यही आस लेकर ,
बने दास तेरे–तेरे दर के चाकर ।
बड़ी खुशनसीबी गुलामी मिले गर ,
मेहरवां जो हो जाएं सरकारे आली ॥

"अकीदत के फूल"

–हामिद अली खाँ "लाज"

आपकी अजमत कहें क्या राज दाने मारफत ।
पासबानों रहनुमाऐ सालिकाने मारफत ॥

आपकी हरबात में मुजमिर[1] है शाने मारफत ।
आपकी हर इक अदा है तरजुमाने मारफत ॥

जिस्मों जाने मारफत–रूहे रवाने मारफत ।
आपकी हस्तीं से है रौशन जहाने मारफत ॥

इक मुजसिम नूरे ईफाँ जाते अकदस[2] आपकी ।
रौशनी पाते हैं जिससे रह रवाने मारफत ॥

है कुजा दिल था तसब्बुर, खालिके मुतलक कुजा ।
कितनी अब आसाँ है राहे रह खाने मारफत ॥

जाने किस–किस बाग से लाये गए ईफाँ के फूल ।
तब कहीं जाकर बना यह गुलिस्ताने मारफत ॥

खुद उठेगी शम्मे मंजिल रहनुमाई के लिए ।
सुऐ मंजिल जब बढ़ेंगे आशिकाने मारफत ॥

फूल बन–बन कर कदम बोसी करेंगे खारोखिश्त् ।
आपकी बरकत से मीरे कारवाने फारफत ॥

आज इस सर चश्माए इर्फा पा सेरी के लिए ।
जौक दर जौक[3] आ रहे हैं तिश्नागाने मारफत ॥

सिर्फ इतनी सी तमन्ना है के बरबख्ते विशाल[4] ।
हो जबीं "हामिद" की अर यह आस्ताने मारफत ॥

---

(१) पोशीदा (२) पाक (३) झुंड के झुंड लाइनों में (४) मृत्यु के समय

"ग़ज़ल"

(श्री हरीश चन्द्र "हरीश" शाहाबादी)

तुही तू जब है दुनियां में बता फिर और क्या होता ।
न होता तो खुदा जाने यहाँ पर और क्या होता ।।
तेरे पोशीदा रहने में तो है शोरो शरर इतना ।
अगर जाहिर तु हो जाता न जाने और क्या होता ।।
तेरी हल्की झलक ने तूर को था खाक कर डाला ।
कहीं अपनी पे आजाता न जाने और क्या होता ।।
अगर हम दोनों मिलकर जान लेते असलियत अपनी ।
न होता काबओ बुतखाना जाने और क्या होता ।।
नजर से एक साकी ने किया बेहोश मैखाना ।
पिलाने पर जो आजाता न जाने और क्या होता ।।
कहा जाता है इन्सां अशरफुल मखलूक दुनियाँ में ।
जो मिट जाती खुदी इसकी न जाने और क्या होता ।।
हमारी गिरियओ ज़ारी ने खीचा मुझ को मंजिल तक।
अगर अशके रवाँ रहते न जाने और क्या होता ॥
बजुज़ मस्ती नजर आता नहीं कुछ भी 'हरीश' अब तो।
अभी तो इब्तिदा है देख आगे और क्या होता ।।

गजल

(हरिशचन्द्र "हरिश" शाहाबादी)

जिला पर जिला कर हुकुम है तुम्हारा, उतर आये गा नूर दिल में खुदारा।
तेरा नाम रोशन है लाला फतेहगढ़, चमकता फलक पर हैं ज्यूँ चान्द तारा॥
विना तुमने डाली है मार्ग सहज की, चला इस पे जो भी मिला है किनारा।
जरूरत समझ कर तुम्हें इस जहाँ में, जमी पर था कुदरत ने तुम को उतारा॥
तेरी "सहज मार्ग" से मंजिल पे पहुंचा, नहीं अक्ल का है जहाँ पर गुजार।
गई घूम जिस पे नजर थी तुम्हारी, बिना कुछ किये बन गया काम सारा॥
मिली खल्क को तुझ से है रहनुमाई, तथा मुल्क का सच्चा रहबर हमारा।
थे हर दिल अजीज और खुश दिल भी इतने, न सानी कोई था जमी पर तुम्हारा॥
कटी उम्र खिदमत में खलके खुदा, यही जिन्दगी का था मफहूम सारा।
गरीबों के सच्चे पुजारी तुम्ही थे, लुटा सब दिया जितना धन था तुम्हारा॥
गरज हर तरफ से यह आवाज आई, मिला हम को समरथ गुरु है हमारा।
विरासत में ऐसा हंसी फूल छोड़ा, मोअत्तर किया जिसने गुलशन हमारा॥

लिया तेरे चरणों में आकर ठिकाना।
बहुत दिन फिरा तू "हरिश" मारा मारा॥

—: गीत :—

जगदीश कुमार "मृगेश" एम० ए०, बी० टी० (अध्यापक)

न जाने कहां से कहाँ जा पहुँचता
अगर तुमने मुझको पुकारा न होता ।।

जलधि की प्रखर धार में बह रहा था ।
अनेकों झकोरे हृदय सह रहा था ।
न तट की कभी कल्पना भी मिलेगा ।
सपन का सुहाना महल ढह रहा था ।

अकेली निशा में भटकता रहा मैं ।
किसी भी किरन से न पाया सहारा ।
न पाया व्यथा ने कभी स्नेह चुम्बन ।
किसी ने न मन को सुमन से संवारा ।

पता तक न मिलता तरणि का भंवर में ।
अगर तुमने आकर उबारा न होता ।
न जाने कहां से कहां जा पहुंचता ।
अगर तुमने मुझको पुकारा न होता ।

उषा से निशा की तरफ जा रहा था,
खबर पर न थी मै किधर जा रहा हूं ।
मुखर स्वर हुये श्वास की बीन से किन्तु—
समझा न अब तक कि क्या गा रहा हूँ ।

तिमिर को विभा का ठिकाना समझकर
हंसा मन बहुत अपनी ही मूर्खता पर ।
मगर तुमने दीपक दिखाकर बताया—
मृषा से बहुत दूर है सत्य का घर ।।

चरण को हमारे न यदि मोड़ देते
उदय भाग्य का फिर सितारा न होता ।
न जाने कहाँ से कहां जा पहुंचता ।
अगर तुमने मुझको पुकारा न होता ।।

अजानी डगर पर कोई कह रहा है
दिया हाथ में ले कि मैं साथ तेरे ।
मुझे भार दे जो लिए है युगों से—
अंधेरों को देता सदा मैं सवेरे ।

सफर आज भी है मगर बेखबर हूँ
डगर की थकन से, व्यथा से, जलन से
चरण बढ़ रहे हैं तुम्हारे चरण पर
हुआ मुक्त जीवन कृपा के नयन से ।।

करोड़ों जनम बीत जाते भटकते –
मिला यदि चरण का सहारा न होता
न जाने कहाँ से कहाँ जा पहुँचता ।
अगर तुमने मुझको पुकारा न होता ।।

—०-०-०—

❀ सहज मार्ग ❀

[भगवत स्वरूप सक्सेना सीतापुर]

सहज मार्ग है रफ्अतों का खजीना,
सहज मार्ग है बन्दगी का करीना,
सहज मार्ग इरफान का है दफीना,
सहज मार्ग आता है सीना ब सीना ।।

अंधेरों पे गालिब हुआ नूर इसका,
दिलों में रहा हुस्न मस्तूर इसका,
है एक मोजजा जज्बे मन्सूर इसका,
सहारा भी लेते हैं मजबूर इसका ।।

निहां इसमें है इल्मों हिकमत के दफ्तर,
मोहब्बत, इबादत, अकीदत के दफ्तर,
सदाक़त, शुजाअत, सख़ावत के दफ्तर,
शरीअत, तरीकत, हक़ीकत के दफ्तर ।।

गीत

मालिक के प्रति

जगदीश कुमार 'मृगेश एम० ए०

हिन्दी प्राध्यापक कालविन इन्टर कालेज महमूदाबाद, सीतापुर

ऐसा दीप जलाया तुमने युग युग का मिट गया अंधेरा।
स्नेह भरी छाया में तेरी धन्य हो गया जीवन मेरा॥

करता हूं तेरा अभिनन्दन
प्राणों के हारों पर!
गीत तुम्हारे ही गाता हूं,
अंतर के तारों पर॥

आज नहीं है एकाकीपन,
साथ सदा तुम मेरे।
बीत रहे तेरे चिंतन में,
सारे सांझ सबेरे॥

ओ अन्तस्तल के अभिव्यञ्जन,
प्रहरी इस जीवन के—
काटो बंधन की जंजीरें काटो जनम जनम का फेरा।
ऐसा दीप जलाया तुमने युग युग का मिट गया अंधेरा॥

जब से कृपा कोर की तुमने,
जीवन ही वरदान बन गया।
दिव्य विभूति! तुम्हें अपनाकर,
पशु से मैं इंसान बन गया॥

तुमने नयन दिये नयनों को,
सुप्त चेतना को नव चेतन।
जर्जर वीणा के तारों को,
अभिनव राग, नवल स्वर कंपन।
जागेगी अब निद्रित धरती –
झंकृत होगा कोना कोना –
विस्फरित नयनों से यह जग देख रहा है चिंतन तेरा।
ऐसा दीप जलाया तुमने युग युग का मिट गया अंधेरा।।

जीवन दीप किरन सा झिलमिल।
आज चमकता हर कण घूमिल।।
किञ्चित चिंता आज न मन में -
क्योंकि तुम्हीं हो जीवन मंजिल।।
अब तक तीरथ तीरथ भटका,
प्रतिमाओं पर माथा पटका।
घाट घाट पंडों ने लूटा,
ग्रन्थों के शूलों में अटका।।
सहज प्रकाश भरे दीपक में –
सहसा मार्ग दिखाया तुमने –
आँजन ऐसा दिया नयन को दिशा दिशा में हंसा सबेरा।
ऐसा दीप जलाया तुमने युग युग का मिट गया अंधेरा।।

प्रार्थना

(मुसाहब राय 'अख्तर' शाहाबादी)

ऐ राहे हकीकत के रहबर मंजिल को मेरी आसां कर दे।
ऐ मुरशिदे दौरां लासानी रहमत से मेरा दामां भर दे॥
तेरे कदमों में लाया हूं अरमानों की दुनियां अपनी।
यक नजरे इनायत हो जाये तू पेशे नजर अरमां कर दे॥

जो तेरे दर पे आता है मुंह मांगी मुरादें पाता है।
यह कसरे मोअज्जम शाहाना इस दर का मुझे दरबां कर दे॥
आसां से आसां काम मुझे मुश्किल से मुश्किल लगता है।
ऐ हफ्त विलायत के शाहा मुश्किल को मेरी आसां कर दे॥

मझधार में था बेड़ा अपना साहिल की तरफ रुख मोड़ दिया।
रहमत से बचाया था तूने क़रीब जिसे तूफां कर दे॥
फँस कर के निकलना मुश्किल था इस दुनियांदारी झगड़े से।
सदके उस एक तवज्जोह के जो इंसां को इंसां कर दे॥

यह राजो नयाज की बातें हैं हैं परदये गैब में पोशीदा।
जो बज्म में तेरी आ जाये तू मस्ते मये इरफ़ां कर दे॥
यां के हर जर्रे जर्रे से यक नूर का तूफां जारी है।
काफ़ूर हो दिल की तारीकी पल भर में जिसे ताबां कर दे॥

यक कैफ का आलम तारी है वह फैजे आम बरसता है।
बदहोशी है बे खबरी में बाखबरी की पहेचां कर दे॥
बस उतनी पिला दे ऐ साकी जो रोजे अजल जितनी पी थी।
यह देख के शेखो बरहमन भी कहदें कि हमें रिन्दां कर दे॥

यह चशमे हकीकत खुलते ही इन्सां जब बेखुद होता है।
कैसा सजदा किस का सजदा खुद ही खुद को हैरां कर दे॥
दिल में ऐसा जजबा भर दे यह खाक रहे महबूब बने।
ऐ "अखतर" जान वही जां है कुरबान दरे जानां कर दे॥

'असलियत ही विसाल उनका है"

(परिव्राजक विष्णु जी विष्णु स्वामी 'सदा' शाहजहाँपुर

जबी अपनी हैं, आस्ताँ उनका ।
हुस्न उनका जलाल उनका है ।।१।।
मेरी नादानियां, अरे तौबा ।
माफ करना कमाल उनका है ।।२।।
दिल पे उन की नजर क्रा पड़ जान ।
इश्क उन का जमाल उन का है ।।३।।
उन से भागें भी तो कहाँ जायें ।
यह सितारों का जाल उन का है।।४।।
वाह क्या जीते जी का मरना है ।
मिटने वालों पे ख्याल उन का है।।५।।
फैज के सिन्धु का तलातुम है ।
कश्ती उन की है, पाल उन का है।।६।।
ऐ 'सदा'दिल में दे जगह उन को ।
असलियत ही विसाल उन का है।।७।।

❀ ईश्वर तू है बड़ा महान ! ❀

भौतिक वादी मानव तुझको (राघवेन्द्र मिश्रा)
ढूढ़ा करता चेतन जड़ में
पंडित और पुजारी कहता
तू है प्रस्तर के तृण तृण में

कोई कहता सत्य ईश है
कहता कोई प्रेम ही ईश्वर
कोई तुझको प्रकृति बताता
क्या तू बसता दिल के अन्दर

यही सोचता रहता हूँ मैं
किन्तु न पाया जान ··· ··· ····

कुछ तेरा रंग रूप बताते
जप, तप औ अर्चना सिखाते
कहते देवालय में तू है –
वही निवास स्थान बताते

निज चश्मे से देख रहे जो
वे सबको काफिर बतलाते
मेरा मन तो बहुत भ्रमित है
ये सिद्धान्त समझ न आते

मैंने दर दर ठोकर खायी
हुआ न तेरा भान ···· ···· ····

हठयोगी तो यह कहते हैं
तेरे दर्शन बहुत असम्भव
जब घर बार सभी कुछ छोड़े
तेरा पाना तब ही सम्भव

कठिन क्रियाओं के द्वारा ही
तू मिलता है यह बतलाते
तेरा मार्ग बड़ा ही दुर्लभ
ऐसी उलटी बात बताते

तेरे पाने की कोई विधि
हाय ! नहीं आसान ··· ··· ···

'सहज मार्ग' के द्वारा इक दिन
सत्य रूप पहचाना तेरा
अब तक जिसको दुर्लभ समझा
कठिन नहीं है पाना तेरा

तेरा बहुत सरल है रस्ता
सारा जगत भ्रमित है फिरता
इस भौतिकता के युग में भी
तुझको हर मानव पा सकता

कितना सरल मिलन है तेरा
हुआ मुझे अब ज्ञान ··· ··· ···

मेरा अन्तर शुद्ध हो रहा
यह मैं मन में ध्यान लगाता
तेरी प्रतिभा आयी मुझमें
और विलय उसमें हो जाता

अन्तर की स्थूल अवस्था
धुयें रूप में निकल रही है
और सूक्ष्मता गुरू कृपा से
रोम रोम में मचल रही है

यही धारणा मन में करके
धरता तेरा ध्यान ···· ··· ···

× × × +

अन्तर में होने दो, भावों का विनिमय
करो ध्यान ईश्वर का, उसमें हो तनमय
गुरू की कृपा द्वारा सभी चक्र उज्जवल हों
ज्ञान चक्षु खुल जायें अन्तर हो ज्योतिमय